VOL- VII ISSUE- XI NOVEMBER 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

महाभारत का रचनाकाल

डॉ. प्रियनाथ सिंह
प्राचीन इतिहास विभाग
डॉ० रामप्रसन्न मणिराम सिंह पी०जी० कॉलेज
सरायरासी अयोध्या (फैजाबाद) उ०प्र०

महाभारत के काल निर्णय का प्रश्न बड़ा जटिल है। यह निर्णय करना प्राय:असम्भव है कि महाभारत के क्रमिक विकास की जय भारत इन तीनों दशाओं कीरचनाओं का काल पृथक-पृथक क्यों है? तथापि इनके पौर्वापर्य की सापेक्ष काल गणनाकरना इसलिए उपादेय है क्योंकि हो सकता है कि उसके द्वारा उनके काल की लगभगठीक से सीमाएं निर्धारित किया जा सके।2...

संस्कृत साहित्य में महाभारत का सबसे पहला उल्लेख आश्वलायन गृहयसूत्र मेंप्राप्त होता है। "सांख्यायन श्रौत सूत्र में भी महाभारत का नाम आया है।" डॉ. रामगोपाल ने सा.श्रौ. सूत्र को आ. गृ. सूत्र का परवर्ती तथा पाणिनी से पर्याप्त पूर्ववर्तीमाना है।" परन्तु हिले ब्रा. सा. श्रा. सूत्र को आश्वलायन श्रौत सूत्र से पूर्व का मानतेहैं। अत: यदि वह आ. गृ. सूत्र के बाद का मान लिया जाय तो भी आ. श्रौ. सूत्र सेपूर्व का होने के कारण यह आए गृ. सूत्र के प्रायः समकालीन की माना जाना चाहिए | [01]

आ. गृ. सूत्र के रचयिता भगवान आश्वलायन षडगुरु शिष्य के द्वारा उल्लिखितएक परम्परा के अनुसार[02]/

"ऋग्वेद प्राति शाख्य के विख्यात प्रणेता शौनक के शिष्य थे |"

स्वयं आश्वलायन ने भी कई बार महर्षि शौनक का सादर उल्लेख किया है। जोउक्त मत का समर्थन करने का सबल साक्ष्य माना जा सकता है |[03]

इस सम्बन्ध में हमें "बृहद्देवता" से एक महत्वपूर्ण साक्ष्य की उपलब्धि होती है | महर्षि शौनक को "'बृहद्देवता" का भी रचयिता बतलाया जाता है। परन्तु हो सकता है कियह उनके किसी ऐसे शिष्य की रचना हो जो काल की दृष्टि से महर्षि शौनक से बहुतबाद का न हो |[04]"बृहद्देवता" (4/139) में आश्वलायन के (आ. गृ. सूत्र 2-6-12) मतको पूर्णरूपेण उद्धृत किया गया है। इस उद्धरण: से 'आश्वलायन गृहसूत्र' की सापेक्षकाल गणना करने में बड़ी सहायता मिलती है, क्योंकि बृहद्देतता कात्यायन कीसर्वानुक्रमणी के प्रमुख स्रोतों में से एक है और निश्चित रूप से कात्यायन से पूर्वकालीनहै | [05]कात्यायन की सर्वानुक्रमी में आये हुए शब्दों के अनेक प्राचीन तथा पणिनी

व्याकरण के प्रतिकूल रूप इस बात के पर्याप्त पुष्ट प्रमाण माने जाते हैं कि कात्यायनपाणिनी के पूर्ववर्ती थे |[06]इस प्रकार 'बृहद्देवता' में उपलब्ध आश्वलायन के उल्लेख.

सेयह सिद्ध हो जाता है कि आश्वलायन पाणिनी से पर्याप्त पूर्ववर्ती रहे होंगे।

आश्वलायन के उक्त अनुमानित कालक्रम की पुष्टि 'ऐतरेय आरण्यक' से भीहोती है षड्गुरु शिष्य ऐतरेय आरण्यक के पंचम अध्याय को आश्वलायन कृत मानते हैं[07]क्योंकि ऐतरेय आरण्यक पाणिनी से पहले[08]का माना जाता है। इसलिए आश्वलायनको पाणिनी से पूर्ववर्ती माना जाता हैं। इसके अतिरिक्त शैली की दृष्टि से भी आ. गृ. सूत्र सूत्रकाल के प्रारम्भिक युग की रचना प्रतीत होती है क्योंकि कुछेक स्थलों में तोइसकी शैली ब्राह्मण ग्रन्थों के अधिक निकट प्रतीत होती है |[09]अत: यह सर्वथा सम्भवहै कि आश्वलायन गृहय सूत्र पाणिनी की अपेक्षा पर्याप्त प्राचीन है। महाभारत केसंकलन काल की पूर्व मर्यादा और अन्तिम सीमाओं के निर्धारण करने के जटिल प्रश्नका समाधान अपेक्षाकृत सरल तब हो सकता है जब हमें पाणिनी के यथा सम्भव ठीक

काल का पता लग जाये। परन्तु दुर्भाग्यवश पाणिनी का काल भी अभी तक पूर्णतयानिश्चित नहीं हो पाया है और विख्यात भारत-विद्या शास्त्रियों ने इस प्रश्न पर अनेकपरस्पर विरोधी मतों का प्रतिपादन किया है। प्रो. आर. जी. भण्डारकर, गोल्ड स्ट्रकर,बेलवलकर तथा पाठक ने पाणिनी का काल 700 ई.प. प्रतिपादित किया है। इसकेविपरीत प्राध्यापक लेसन, बोलिंग और कीथ पाणिनी को चतुर्थ शताब्दी ई. पू. कामानते है |[10]

डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल कृत 'पाणिनी कालीन भारतवर्ष' काल निर्णय केविषय में विवेचना प्रस्तुत करने वाला अन्तिम ग्रन्थ है। डॉ. अग्रवाल के अनुसार पाणिनीगौतम बुद्ध के परिवर्ती थे और 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य में विद्यमान थे |[11]

डॉ. अग्रवाल के आधारभूत तर्कों की मीमांसा और कुछेक अंशों का खण्डन[12]करते हुए डॉ. राम गोपाल ने कीथ, कीलहार्न, मैकडानल, मैक्समूलर और भण्डारकर[13]आदि विद्वानों के मतों का हवाला देते हुए महाभाष्यकार पंतजलि और वार्तिककारकात्यायन और सूत्रकार पाणिनी की तिथियों को निश्चित करने का प्रयत्न किया है।

उसके मत के अनुसार पतंजलि, कात्यायन तथा पाणिनी की तिथियाँ क्रमशःलगभग 150 ई. पू. से चतुर्थ शताब्दी ई. पूर्व तथा 600-550 पूर्व होनी चाहिए |[14]इस प्रकार यदि यह मान लिया जाय कि पाणिनी का काल छठी शताब्दी ईसापूर्व का मध्य हो सकता है तो हमारे पहले किये गये विवेचन के अनुसार सूत्रकाल केप्रारम्भ में ही निबद्ध हुए आ. गृ. सू. का रचनाकाल लगभग 800 ई. पू. माना जासकता है। इस काल क्रम की सीमाओं को और पीछे की ओर भी ले जाया जा सकताहै, किन्तु यदि डॉ. अग्रवाल के पाणिनी के काल निर्णय के अनुसार ही इसकी नीचे कीसीमा का आकलन किया जाये तो भी आ. गृ. सू. की रचना का काल पाणिनी के काल से कम से कम 200 वर्ष पूर्व अर्थात् सातवीं शताब्दी के ई. पू. का मध्यकालअवश्य मानना होगा।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह भली भाँति प्रतिपादित हो जाता है कि यदिभारत के उपबृहित रूप की नहीं तो उसके पूर्व रूप की रचना या संकलन 700 अथवा800 ई. पू. में अवश्य हो चुकी थी। हम पहले कह चुके हैं कि महाभारत एक विश्वकोश जैसा है। वह एक संकलन है और किसी एक व्यक्ति की किसी एक काल की

रचना नहीं है। अतः यह स्पष्ट है कि इसमें संकलित सामग्री की प्राचीनता सुदूर अतीततक पहुँचती है। मनु के नाम से प्रसिद्ध अनेक श्लोकों का महाभारत में पाया जाना इसबात का प्रमाण है

कि प्राचीन काल से परम्परा के सहारे चले आये गा आ से ज्ञान कासंचय महाभारत में कर लिया गया है। महाशय हाप्किस और बूहलरूर[15] यह प्रतिपादितकिया है कि प्राचीन भारत में मनु रचित माने जाने वाले सुभाषितों की एक विपुल चलसम्पत्तिपहले से ही विद्यमान थी जिन्हें अनेक ग्रन्थकारों ने आदर पूर्वक उद्धृत कियाहै | [16]यह बात मनुस्मृति के लगभग दो तिहाई श्लोकों के महाभारत में भी संकलित करलिये जाने के तथ्य से और भी पुष्टि हो जाती है। साथ ही इस विवेचन से यह स्पष्टहै कि इन मनु श्लोकों के आधार पर महाभारत को मनुस्मृति (300 ई.पू.) से परवर्तीसिद्ध करने के प्रयास सर्वथा भ्रान्तिमूलक है।

इस प्रकार सुदूर अतीत के ज्ञान-विज्ञान का यह महान आकार ग्रन्थ अनेकसामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक वर्ण्य विषयों की सामग्री को अपने आप मेंआत्मसात् करते हुए अपने वर्तमान उपबृंहित रूप में कब तक सम्पन्न हुआ? इसकानिर्णय करना नितान्त आवश्यक है। आपेक्षिक कालक्रम की दृष्टि से इस प्रकार कीनिचली सीमा का निर्धारण किये बिना हमें यह ज्ञात नहीं हो पायेगा कि राजतन्त्र कीदृष्टि से हम महाभारत की जिस सामग्री का ऐतिहासिक-वैज्ञानिक निश्लेषण कर रहेहैं उसके द्वारा किस काल तक के भारतीय राजनीतिक चिन्तन पर प्रकाश पड़ता है।मैकक्रिंडल ने लिखा है कि जिस काल में यूनानी सेनाएं सिकन्दर के नेतृत्व मेंभारत पर आक्रमण कर रही थी। (400 ई. पू.) उस काल में भारतीयों के पास एक"इलियड" जैसा महाकाव्य था। मैकक्रिंडल द्वारा उल्लिखित यह महाकाव्य महाभारतही हो सकता है |[17]

परन्तु महाभारत के उपबूंहित एक लाख श्लोकों वाले हरिवंश, समेत रूप काउल्लेख हमें पहले एक गुप्तकालीन शिलालेख में प्राप्त होता है।[18]इस प्रकार इसशिलालेख से पूर्व महाभारत के उपबृहित रूप का और कहीं स्पष्ट वर्णन नहीं होने सेउत्साहित होकर कई विद्वानों ने महाभारत के राजधर्म पर्व को महाभारत में एक अर्वाचीनप्रसंग सिद्ध करने का प्रयास किया है और इसे गुप्त काल की रचना बतलाने की चेष्टाकी है। इस प्रकार राजधर्म पर्व को अर्थशास्त्र मनुस्मृति और अन्य नीति ग्रन्थों से भीपरवर्ती सिद्ध करने के लिए अनेक साक्ष्यों का सहारा लिया गया है, जिसमें एक यह भीहै कि इसमें जैन साधुओं का उल्लेख[17]और तोखारी आदि ऐसी यवन जातियों केनाम[19]मिलते है जो ई. पू. काल में भारत में थी ही नहीं। इन मतों की क्रमशः समीक्षाआवश्यक है।

महाभारत का कौटिल्य के पूर्ववर्ती थे इस सम्बन्ध में अधिकारी दिद्वानों नेअर्थशास्त्र की तिथि चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में मानी है।[20] महाभारत के राजधर्म पर्व में जिसमें शायद तत्कालीन शासक वर्ग के मार्गदर्शन के लिए काल में प्रचलितसम्पूर्ण राजनीतिक चिन्तन का एकत्र संकलन कर दिया गया है। उस समय के तथापूर्ववर्ती अनेक वृहस्पति, शुक्र, वामदेव मुन आदि राजनीतिक विचारकों के नामों काउल्लेख हुआ है। इनमें कौटिल्य के नाम का न होना यह सिद्ध करता है कि इस पर्वकी बहुत सी सामग्री निश्चित रूप से कौटिल्य से पहले ही रही होगी और उसके इससंकलन को वर्ण्य विषय, प्रतिषाद वस्तु और उचित वर्गीकरण आदि की पूर्व निश्चितयोजना के बिना एक शिथिल और अनुपयुक्त विवेचन सफल विवेचन प्रस्तुत करने कीआवश्यकता को अनुभव किया होगा |[21]कौटिल्य के अनेक विचारों पर महाभारत कास्पष्ट प्रभाव देखले[22]' हुए यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है कि राजधर्म पर्व कोअर्थशास्त्र

का परवर्ती कहने लगे विद्वानों का कथन केवल आंशिक सत्य ही समझा जासकता है | [23]

महाभारत महाभारत की विमल बोधचार्य कृत टीका की पाण्डुलिपियों में से प्राप्तज्योतिष सम्बन्धी सामग्री से यह संकेत मिलता है कि महाभारत युद्ध का काल लगभग 11वीं 12वीं शताब्दी ई. पू. होना चाहिए क्योंकि यही वेदांग ज्योतिष- का भी काल है।यदि लगभग यही महाभारत संहिता का काल मान लिया जाय क्योंकि महाभारत मेंधनिष्ठा नक्षत्र के अयन के प्रारम्भ का वर्णन किये जाने के आधा पर की गई ज्योतिषगणना से भी महाभारत का काल लगभग 10वीं शताब्दी ई. पू. ही प्रमाणित होता है तोमहाभारत के महत्त्वपूर्ण अंश राजधर्म पर्व को दस शताब्दी बाद का मानने वाले विद्वानोंका मत भला कैसे माना जा सकता हैं। साथ ही यदि 150 ई. पूछ की रचना माने जानेवाले पतंजलि कृत महाभाष्य में महाभारत का नाम नहीं है तो कया इस नकारात्मक साक्ष्य के आधार पर आप कौटिल्य के अर्थशास्त्र की सत्ता भी महाभाष्य से पूर्व कालमें स्वीकार न करेंगे। अज्ञात से अज्ञात समर्थन की यह पद्धति कदापि तर्कसंगत नहींहो सकती । न ही कुछेक शक, हूण औश्र तुषार आदि जातियों के नामों के आधार हैपर राजधर्म पर्व का काल 100 से 500 ई. के पश्चात् तक का सिद्ध किया जा सकताहै। क्योंकि इस प्रकार के उल्लेखों को यदि बांद में मिलाये हुए प्रक्षेप भी मान लियाजाये तो भी इस तथ्य का कदापि खण्डन नहीं होता कि महाभारत का आधुनिकविकसित स्वरूप राजधर्म समेत लगभग 350 ई. पू.७ में विकसित हो चुका था |[24]उसकाल में दक्षिण की यात्रा करने वाले यूनानी यात्री तथा मैकक्रिंडल कूज़ मैगस्थनीज केउल्लेखों से भी इस बात की पुष्टि होती है कि उस समय हिन्दुओं के पास एक लाखश्लोकों का एक,.इलियड विद्यमान था और यूनानी महामारत की कुछ कथाओं सेपरिचित थे| [25]यहाँ यह स्मरणीय है कि उक्त काल निर्णय सम्पूर्ण महाभारत ग्रन्थ केदृष्टि में रखकर किया गया है। यद्यपि यह सम्भव है कि इसी सुदीर्घ काल में कतिपयअंश प्रक्षिप्त किये गये हो और घटायें भी गये हो।

उपर्युक्त समस्त तथ्यों के आलोक में महाभारत युद्ध का समय ई. पू. नवींशताब्दी के लगभग स्वीकार किया जा सकता है तथा मूल महाभारत का रचनाकालपाँचवीं सदी ई. पू. स्वीकार करना अधिक उचित एवं तर्क संगत होगा।

संदर्भ सूची :-

01. हिले ब्राण्ट : रिच्वल लिटरेचर पृष्ठ 25, सां, श्रौ७ सूत्र. पु। प्राक्कथन पृष्ठ10 राम गोपाल पृष्ठ 72
02. मैक्समूलर वहीं पृष्ठ 120 आदि।
03.आ.ए गृ. श्रौ. सूत्र 4, 7, 14 तथा 4, 9, 15 |
04.मैक्डोनल, 'बृहद्देवता', भूमिका पृष्ठ 25, काथ, ऐतरेय आरण्यक भूमिका पृष्ठ 21,
05.विंटरनीज, हिस्टरी ऑफ इण्डियन लिटरेच, पुस्तक 1 पृष्ठ 286।
06.मैक्डोनल, बृहद्देवता, भूमिका पृ० 21-22, सर्वानुक्रमणी, भूमिका पृ. 4 |
07.कीथ, ऐ. आए, भूमिका, पृ. 21।
08 .मैक्डोनल, बृहद्देवता, भूमिका पृ० 22-23, कीथ, ऐ0 आ0, भूमिका, पृ० 21।
09. राम गोपाल, वहीं पृष्ठ 69 |
10.कीथ, ऐ. आए., भूमिका, पृ० 21। आदि।
11. आ. गृ. सू. 331-4, वही 4, 4, 2-8|
12 .आरए0 जी0 भण्डास्कर, बम्बई गजेटियर, 1, 2 पृ० ।140
13.आदि गोल्डस्ट्रकर,पाणिनी, पृ० 225-7, बेलबलकर, सिस्टमस ऑफ संस्कृति ग्रामर, 15,
14.पाठक ए. बी. ओ. आर. आइ.11, 83, लैसन, इण्डियन एंतिक्वरी, 2,477, बोलिंग, अष्टाध्यायी, भूमिका, कीथ, एच0 ओ. एस. पृ. 18 पृ० 138

15. वासुदेव शरण अग्रवाल : पाणिनी कालीन भारतवर्ष 8, 467-480।
16. राम गोपाल, इण्डिया आफ वैदिक कल्पसूत्राज, पृ० 86-87।
17. ए0 बी0 कीथ, हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर 427 आदि। गोल्ड स्ट्रकर,
18.वही 288 भण्डारकर, इण्डियन एण्टीक्वरी, 1, 299, 2, 56, बूहलर, सैक्रेड बुक्स आफ दि ईस्ट, पु. 2, 43 टिप्पवण्घी |
19. राम गोपाल पृ. 88।
20. हाप्किस जर्नल आफ अमेरिकन ओरियष्टलिस्ट सोसाइटी पृष्ठ 11 पृष्ठ 257, दे. बूहूलर वही पृ० 25, पृ० 90।
21. कौशीतकी गृहय सूत्र 2, 3, 19 तुलनीय मनु 2, 246, वही 3, 7, 130 तथामनु 4, 11 इत्यादि।
22. मैक्क्रिडल (एंश्यैण्ट इण्डिया, मैगस्थनीज एण्ड इरियन, पृ० 200-5) के उल्लेख पर आधारित इस मत से भी होती है कि पाणिनी कक पी मूल और उपबृहित दोनों ही रूपों से परिचित थे पाणिनीकालीन भारत 1पृ. 178 पर उद्घृत।
23. इन्सक्रिटशनम् इण्डीकेरमू, भाग 3 पृ० 134 पर प्रकाशित यह शिलालेख चेदि संवत् 197 या विक्रमी संवत् 502 में लिखा गया अर्थात् ई. सन् 445में।
24. दे. आदि पौष्य-आख्यान में शपणक वन 1490, 68 में एडूक नामक बौद्धस्मारक |
25. न शशाक वशीकर्तु यं पाण्डुरपि वीर्यमान्। सोअर्जुनेन वशं नीतो राजासीद् यवनाधिप:। आदि, 139, 21।
26. जौलो-जैड. डी. एम. जी., पृ. 67, पृ 69-96, विशेशत :95-96 |
27. दीक्षितार, बी. आर. रामचन्द्र, मौर्यन पालिटी मैसूर (1932) पृष्ठ 14।
28. अर्थशास्त्र 1.6, 6.8।
29.मजूमदार, आर. सी. पृ. 25 मैकडानल सं० सा0 ई. पृ० 309।
30.चिन्तामणि विनायक वैध-दि महाभारत- ए क्रिरिमिज... पृ० 185|